बाह्य ग्रहों की संख्या 1000 के पार

पिछले हफ्ते अन्य सौर मंडलों में देखे गए ग्रहों की संख्या का आंकड़ा 1000 को पार कर गया। वैसे यह तय करना मुश्किल है किस बाह्य ग्रह को 1000वें ग्रह का दर्जा दिया जाए क्योंकि एक दिन यह संख्या 999 थी और अगले दिन 1010 पर पहुंच गई। एक रात में 11 बाह्य ग्रह खोजे गए। ये सारे 11 ग्रह यूके के वाइड एंगल्ड सर्च फॉर एक्सोप्लेनेट्स ने की। वैसे बाह्य ग्रहों की खोज में नासा की केपलर अंतरिक्ष दूरबीन सबसे सफल रही है - अब तक इसने 152 बाह्य ग्रहों की खोज की है।

बाह्य ग्रहों के बारे में एक दिक्कत यह है कि उनकी संख्या के बारे में एकदम सही निर्णय करना मुश्किल होता है। कारण यह है कि कोई ग्रह खोज लिया गया है, इसका फैसला करने के मापदंड बहुत अलग-अलग हैं। जैसे एक सूची के मुताबिक फिलहाल कुल 990 बाह्य ग्रहों की खोज हुई जबकि नासा की सूची में 906 ही हैं। इसके अलावा ग्रह की परिभाषा को लेकर भी मतभेद हैं। इस मतभेद का सम्बंध प्लूटो वाली समस्या से नहीं है। प्लूटो के मामले में दिक्कत यह थी कि वह बहुत छोटा है और इसलिए उसे ग्रहों की जमात से हटाकर बौना ग्रह की जमात में रख दिया गया था। बाह्य ग्रहों के संदर्भ में समस्या दूसरी ही है। इनमें से कुछ बहुत बड़े हैं और खगोल शास्त्री यह तय नहीं पा रहे हैं कि ये ग्रह हैं या बुझ चुके तारे हैं। ये ऐसे पिंड होते हैं जो ग्रहों के मुकाबले विशाल हैं मगर इनमें इतना पदार्थ नहीं है कि संलयन की क्रिया जारी रह सके। इसलिए इनमें से विकिरण नहीं निकलता। मगर संभवतः इनकी शुरुआत किसी सामान्य तारे की तरह ही हुई होगी जब इनमें इतना द्रव्यमान था कि संलयन की क्रिया शुरू हुई होगी मगर इतना भी नहीं था कि संलयन की प्रक्रिया स्वतः चलती रहे।

एक समस्या यह है कि कुछ ऐसे बाह्य ग्रह हैं जिनकी उपस्थिति की पुष्टि की जा चुकी है मगर हो सकता है कि इन्हें सूची में से हटाना पड़े क्योंकि संभवतः ये आंकड़ों की बाज़ीगरी के परिणाम हैं। उदाहरण के लिए बाह्य ग्रह अल्फा सैंटोरी बीबी के अस्तित्व को लेकर सवाल उठे हैं। ऐसे कई बाह्य ग्रह हैं। तो खगोल शास्त्रियों को कोई तरीका निकालना पड़ेगा कि बाह्य ग्रहों की इस भूल भुलैया में कुछ सलीका पैदा हो। ***(स्रोत फीचर्स)***